

जाता है इसका ऊपरी भाग मुड़ा हुआ तथा नीचे का भाग चपटा होता है) **लाक्ष**. ऐसा कार्य जिसे किसी को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाए परंतु स्वयं के लिए ही हानिकर हो जाए।  
boomerang

**बूर स्त्री.** (देश.) 1. गेहूँ आदि अन्न को पीसने के बाद छानने पर निकलने वाला अनाज का छिलका 2. कुछ वस्त्रों पर विशेष कर ऊनी वस्त्रों पर ऊपर निकल आने वाले रोएँ।

**बूरा पुं.** (देश.) 1. कुछ भूरे रंग की साफ की हुई तथा बारीक पीसी हुई खांड (कच्ची चीनी) 2. बुकनी, चूर्ण।

**बूरानी स्त्री.** (फा.) बेंगन का रायता।

**बृहती स्त्री.** (तत्.) 1. भटकटैया, कटाई, बरहंटा, बनभंटा आदि नाम का पौधा 2. बड़ी वीणा, विश्वावसु गंधर्व की वीणा का यही नाम था 3. उत्तरीय वस्त्र, उपरना 4. एक वैदिक-वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नौ वर्ण होते हैं।

**बृहत् वि.** (तत्.) 1. विशाल, बड़ा, लंबा, चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत, दूर तक फैला हुआ 2. दृढ़, बलिष्ठ, शक्ति संपन्न 3. सघन, घना, ठसा हुआ 4. उच्च, ऊँचा या भारी (स्वर) आदि 5. यथेष्ट, पर्याप्त, प्रचुर 6. पूर्ण विकसित।

**बृहत्तर वि.** (तत्.) 1. किसी बड़े की तुलना में और अधिक बड़ा, विशालतर 2. और अधिक विस्तार युक्त 3. उस रूप, प्रकार या विस्तार का जिसमें किसी मूल पदार्थ, देश आदि के अतिरिक्त उसके प्रभाव से युक्त आसपास के कुछ और पदार्थ अथवा देश भी सम्मिलित हों जैसे- बृहत्तर भारत (इति.) भारत के अतिरिक्त श्रीलंका, बर्मा, सुमात्रा आदि देश जिन पर किसी समय भारत का यथेष्ट प्रभाव तथा बहुत कुछ अधिकार था।

**बृहत्पर्णी पुं.** (तत्.) वन. ऐसे पौधे जिनमें पत्तियाँ ही प्रमुख होती हैं, तने गौण तथा पर्व छोटे होते हैं।

**बृहत्वृत्त पुं.** (तत्.) गणि. गोले के पृष्ठ पर विद्यमान कोई वृत्त जिसका केंद्र गोले का केंद्र है। great circle

**बृहत्-हिमालय पुं.** (तत्.) कराकोरम से म्यांमार पर्यंत तथा भारत के उत्तर से लेकर तिब्बत पर्यंत फैली हुई हिमालय की पर्वत-शृंखलाएं।

**बृहदारण्यक पुं.** (तत्.) एक प्रसिद्ध उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण के अंतिम छः अध्याय।

**बृहद् वि.** (तत्.) समस्त पदों में बृहत् का एक संधिगत रूप दे. बृहत्।

**बृहद्रथ पुं.** (तत्.) 1. इंद्र का विशेषण 2. एक राजा का नाम, जरासंध का पिता।

**बृहन्नल पुं.** (तत्.) राजा विराट के दरबार में नृत्य तथा संगीत के शिक्षक के रूप में रहते हुए अर्जुन का नाम।

**बृहन्नला पुं.** (तत्.) दे. बृहन्नल।

**बृहस्पति पुं.** (तत्.) 1. देवों के गुरु 2. सौर परिवार का सबसे बड़ा ग्रह जिसका व्यास पृथ्वी से लगभग ग्यारह गुना है 3. एक प्रसिद्ध वैदिक देवता 4. एक स्मृतिकार का नाम 5. ऋग्वेद के एक मंत्रद्रष्टा 6. अर्थशास्त्र पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ के रचयिता, जिनका ग्रंथ उपलब्ध नहीं है परंतु कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में उनके विचारों का उल्लेख किया है।

**बेंग पुं.** (तद्.) मेंढक।

**बेंच स्त्री.** (अ.) 1. लकड़ी, लोहे आदि की एक प्रकार की लंबी चौकी 2. औजार आदि रखने की मेज 3. न्यायालय, न्यायपीठ 4. न्यायाधिकरण 5. पशु-प्रदर्शनी में बने छोटे कमरे का स्टॉल 6. गाड़ीवान के गाड़ी में बैठने का स्थान 7. पौधों को हरा रखने के लिए बने शीशे के घर (वनस्पति गृह) में एक ऊँचा स्थान 8. भट्ठी में गैस के एकत्र होने का स्थान 9. विभिन्न ऋतुओं के कारण हुई टूट-फूट से बनी मिट्टी या पत्थर की पैड़ी, कगार 10. मंच 11. विधान सभा या संसद में विशेष दल के बैठने के लिए नियत स्थान। bench

**बेंट स्त्री.** (तद्.) औजारों आदि में लगा हुआ काठ का दस्ता, मूठ।